अध्याय-त्रयोदश

अंतिम प्रयास

हरिगीतिका

जब लौट आए नागपुर[1] से, कृष्ण मानस खिन्न था ।
भावी मनुज क्षति देखकर उर पूर्ण करूणा क्लिन्न था ।
आए सभा में जहां राजित, पुत्र सहित विराट थे ।
सात्यकि सपाण्डवबंधु द्रौपद[2], द्रुपद नृप विभ्राट थे ॥

प्रस्ताव जो था शांति का कुरू ने अनादृत कर दिया ।
मानी सुयोधन ने हमें अविवेकयुत उत्तर दिया ।
हो ग्राम्य[3] पाण्डव ग्राम पंचक, मांगते विक्रम बिना ।
सूच्यग्र[4] भी धरणी प्रदेया, है नहीं रण के बिना ।2॥

गिरिश्रृंग से जो है लुढकता, वेगयुत पाषाण है ।
उसको समझता मूढ अपनी, शक्ति का सुप्रमाण है ।
जो मानता अघसिन्धुमज्जन[5], प्रकृत निज अधिकार है ।
उसका स्वयं परमेष को भी, असंभव उद्धार है ॥3॥

गीतिका छन्द

द्रुपद बोले आपदा पद[6] है, उपेक्षा कुजन[7] की ।
भीम बोले बने भंजन, भूमिका नव सृजन के ॥4॥
कहा अर्जुन ने कि आयत, हो चुकी कुत्सित कथा ।
बाण अपनोदनोचित[8] है, सर्वथा अग्रज व्यथा ।

हरिगीतिका

बोले विराट-विराट[9] बलपति, युध्द यदि अवलंब है ।
लगता न तो अब क्षम्य राजन, और अधिक बिलंब है ।
उनकी युयुत्सा[10] है युवा तो, समातुर युयुधान[11] भी ।
बोले यमज जाकर अलंकृत, करें वे यमधाम भी ॥5॥

गीतिका

हो गई संसद विसर्जित, धर्मसुत ने तब कहा ।
देखता आसन्न संगर[12], मैं प्रलयकारी महा ।
जब अस्वीकृत सुयोधन से शांति के प्रस्ताव थे ।
पितामह गुरूश्रेष्ठ के क्या, तातश्री के भाव थे ॥6॥

1 नागपुर	2 अभिमन्यु	3 गंवार
4 सुई की नोंक	5 पाप के समुद्र में डूबना	6 स्थान
7 दुर्जन	8 दूर करने योग्य	9 विशाल
10 युद्ध करने की इच्छा	11 सात्यकि	12 युद्ध

हरिगीतिका

हरि ने कहा श्रवणीय अग्रज, वे सकल शुभ भाव हैं ।
कुरू सिंधु में कुछ द्वीप हैं, शुभ जहां ऋत[1] फैलाव है ।
तट झेलते जिनके निरंतर, क्षारवारि[2] प्रहार को ।
हो उच्च भी जो देखते हैं, नीति भू अपहार[3] को ॥7॥

हे पुत्र तुमको मोह वश है, मान अपनी शक्ति का ।
दुर्देव कुरू का है कि जागा, लोभ परसंपत्ति का ।
क्षणमात्र में जो राज्य त्यागा, पिता के सुख के लिए ।
अन्याय से तुम हस्तगत सुत, कर रहे दुख के लिए ॥8॥

ज्ञानी वही आधा बचाले, सर्व जब जाता लगे ।
विपदागमन से पूर्व ही जो, मनुज सुविचारित जगे ।
बलवान से विग्रह क्षयावह[4], मूढ़ भी यह जानता ।
निष्फल सदा है वेत्रसम[5] यह काल्पनिक स्वमहानता ॥9॥

गांधारजा बोली कुपित हो, भूप रहते आर्य के ।
और होते पितामह के, वंष के धुरधार्य[6] के ।
तू कौन किस अधिकार से है, अधिप[7] के सम बोलता ।
करने अहित कुरू राज्य का शठ, मुख निरंतर खोलता ॥10॥

केवल पितामह का प्रकृत[8] इस, राज्य पर अधिकार है ।
ढोया उन्होंने ही निरतंर, गुरू प्रषासन भार है ।
प्रण पाल कर अपना महत्तर,राज्य अनुजों को दिया ।
रक्षण सदा निरपेक्ष रहकर, देश का विधिवत किया ॥11॥

इनकी अवज्ञा नहीं तेरे, पिता तक करते कभी ।
अविजेय इनकी शूरता का, मान करते हैं सभी ।
आयुष्य में केवल नहीं तप, ज्ञान में भी ज्येष्ठ हैं ।
कुरू हित समाराधक सदा य, धर्मविद कुरू श्रेष्ठ हैं ॥12॥

1. सत्य	4. क्षीण करने वाला	7. स्वामी
2. खारापानी	5. बेंत के समान	8. स्वाभाविक
3. अपहरण	6. भार वहन करने वाले	

अधिकृत यही हैं राजविषयक, सकल निर्णय के लिए ।
वट वृक्ष सम जो हैं अवस्थित, सुचिर घन छाया किये ।
हो मान्य उनका ही विनिर्णय, अर्धकुरू दातव्य है ।
निज बंधु से संघर्ष का पथ, सर्वथा हातव्य[1] है ॥13॥

जो सुबल पुत्री ने कहा वह, उचित ही है सर्वथा ।
उपसंहृता[2] हो क्षयप्रसविणी[3], अचिर यह विग्रह कथ ।
आयुध कुशलता ही न जग में, श्रेय साधन सक्षमा ।
अन्याय सहती है न चिर तक, भूत धात्री[4] भी क्षमा[5] ॥14॥

सदसद्विवेकी हो न नर तो, ज्ञान उसका दंभ है ।
अनुक्रोष्य[6] है वह व्यक्ति जिसका, मात्र बल अवलंब है ।
राजर्षि कुल उत्पन्न का हठ, हे तनुज क्या श्लाघ्य[7] है ।
सकलंकता राजत्व की क्या, जगत में आराध्य है ॥15॥

मैं देखता हूं नित्य नय-क्षय,इस सभा में हो रहा ।
समदर्शिता प्रणयी[8] निरंतर, धैर्य अंतर खो रहा ।
अब तक यहा हूं नागपुर में, मात्र कुरूवर[9] के लिए ।
विख्यात जो धर्मज्ञ हैं द्विज, गो प्रजा हित के लिए॥16॥

आचार्यता की थी ग्रहण रख मानकुरू अनुरोध का ।
विष्वास था मुझको सुदृढतर, कुरू सुमति अवबोध का ।
मैंने महारथ कर दिए पर, नहीं बंधु विरोध को ।
हठधर्मिता कुरू दीप्त करती, मात्र मेरे क्रोध को ॥17॥

गीतिका छंद

सौंपकर अग्रज अनुज को, गुरू[10] धरोहर राष्ट्र की ।
वन को गए जब पाण्डु सत्ता, तब हुई धृतराष्ट्र की ।
अक्षतावष[11] किंतु शासन, चलाते थे कुरू प्रवर ।
और उनका साथ देते, थे विदुर भी नय प्रखर ॥18॥

1. त्यागने योग्य	5. पृथ्वी	9. भीष्म
2. लौटी गयी , रोकी गयी	6. दया करने योग्य	10. भारी, महत्वपूर्ण
3. नाश उत्पादिका	7. प्रशंसनीय	11. अंधे होने के कारण
4. समस्त प्राणियों को धारण करने वाली	8. प्रेमी	

गीतिका छंद

संधि विग्रह बल[1] नृपायन[2], आदि कुरू थे देखते ।
आय-व्यय सेवक विदुर ही, सुमति थे आलेखते ।
त्रिगुणवत[3] एकत्र हो वे, प्रजापति कृत सृष्टि का ।
समुद[4] करते युक्तियुत वे, कार्यभूति विसृष्टि[5] का ॥19॥

मधुरिमा कांछित नहीं है, प्रेय[6] तुमको तिक्तता[7] ।
विनय को देकर तिलांजलि, धारते उत्सिक्तता[8] ।
छोड़ यह दुर्मार्ग मार्गित[9], करो बांधव प्रेम को ।
सुयश वर्धन कर सुनिश्चित, करो निज जन क्षेम को ॥20॥

हरिगीतिका

बोले विदुर लगती मुझे, कुरू आपदा आसन्न[10] है ।
फिर भी नहीं होता धृतोद्‌यम[11], आपसा व्युत्पन्न है ।
कुरूवंश के रक्षक सदा से, पुन: उद्धारक बनो ।
कैतव[12] अहंकृति द्‌वेष लिप्सा, के समुत्सारक[13] बनो ॥21॥

गद[14] का निरोध सुवैद्‌यवत ही, कर महौषधि तिक्त[15] से ।
विचलन करें यह दूर सत्वर[16], बाहुबल अतिरिक्त से ।
संकल्प यदि उठता न यह तो, साथ मेरे आप भी ।
नरपति सहित हों वानप्रस्थी, मिले शम दुष्प्राप भी ॥22॥

कुरू वंश क्षय आसन्न लगता, शूर होते आप सा ।
कर दें नियंत्रित शक्ति से जो, सिर चढ़ा अभिशाप सा ।
कहने लगे तब भीष्म यह सब, शक्य[17] यदि राजा कहे ।
सिंहासनातिगतानुरागी[18], मम न बल विक्रम रहे ॥23॥

धृतराष्ट्र बोले शांत हों गुरू, अवज्ञा भय कारिणी ।
देवेन्द्र की श्रीशक्ति की यह, थी बनी अपहारिणी ।
कवि वचन अवमानक[19] हुए बलि, बंधयुत गतधारिणी[20] ।
हे पुत्र मति कृति[21] को करो तुम, नीति की अनुसारिणी ॥24॥

1. सेना	8. अहंकार	15. तीखा
2. राजाओं से प्राप्त भेंट	9. खोजो	16. शीघ्र
3. सत्व रज व तम के समान	10 पास में	17. संभव
4. प्रसन्नतापूर्वक	11 उद्‌यम करने वाला	18. सत्ता का उल्लंघन करने का प्रेमी
5. विसर्जन, वितरित करना	12 छल	
6. प्यारी	13. नष्ट करने वाला	19. अपमान करने वाला
7. तीक्ष्णता	14. रोग दूर करने वाला	20. भूमिहीन
		21. कर्म

बोले विकल धृतराष्ट्र तुम उस, वंष के हो वंशधर ।
यौवन दिया जिसमें पिताहित, एक क्षण में विहंस कर ।
जनकार्थ त्यागा राज्य सुख सब, पितामह वे धन्य हैं ।
हितकर परम मेरे वचन भी, सुत नहीं अवमन्य[1] हैं ॥25॥

गीतिका छंद

मैं धरोहर पाण्डु की ही, इसे अब भी मानता ।
अक्षता[2] वश मैं नहीं नृप, योग्य यह भी जानता ।
हमारे पूर्वज प्रतीप न, राज्य सुत को दे सके ।
वन गए देवापि दुस्त्वक[3], उदीची[4] नग देश के ॥26॥

नहीं विप्रों ने किया अभिषेक रोगी मानकर ।
नहीं नर हीनांग[5] नृपता, धार सकता मान कर ।
इसी कारण अनुज शांतनु, को मिला था छत्र यह ।
नियम दृढ़ चलता रहा है, अवाधित सर्वत्र यह ॥27॥

अनुज भी अतएव शासक, थे बने इस राज्य के ।
थे वही उपयुक्त भारत, सकल नृप अधिराज्य[6] के ।
गए वन अभिशप्त हो वह, देष मुझ पर छोड़कर ।
क्यों तुम्हें यह राज्य दे दूं, मैं नियम को तोड़कर ॥28॥

नहीं जब अधिकार मेरा, तुम्हारा होगा कहां ।
युधिष्ठिर जैसा गुणी जब, पाण्डु सुत बैठा यहां ।
और भी वृत्तांत सुन लो, सुत हमारे वंश का ।
प्राप्त भी है राज्य खोया, पुत्र ने निज अंश का । ।29॥

थे ययातिज[7] प्रथम सुत यदु, किंतु उद्धत[8] वेष थे ।
हीन निज से उन्हें लगते, सभी भूमि नरेश थे ।
क्रुध्द हो अवमानना से, सखा जिनके साथ द्रुत[9] ।
कर दिया हो क्रुद्ध उनको, पिता ने ही राज्य च्युत ॥30॥

1. न मानने योग्य	4. उत्तर दिशा	7. ययाति राजा से उत्पन्न
2. जन्मांधता	5. विकलांग	8. उद्दण्ड स्वभाव के
3. त्वचा रोग युक्त	6. साम्राज्य	9. शीघ्र

गीतिका छन्द

विप्र अनुमत कर दिया फिर, तिलक छोटे तनय का ।
जो सदा प्रतिमान[1] था तप, त्याग विद्या विनय का ।
वे हमारे आदिवंशी, पुरू सदा ही मान्य हैं ।
आज भी जो प्रेरणा के स्रोत धीर वदान्य[2] हैं ॥31॥

हरिगीतिका छन्द

अवधीरणा[3] करता मनुज जो, पितृ गुरू ऋषि वचन की ।
करता उपेक्षा द्वेषभोगी[4], के विषम विष रदन[5] की ।
उसका कभी कल्याण संभव, है नहीं इस लोक में ।
वह क्षिप्त करता सकुल[6] निज को, आशुगुरूतर शोक में ॥32॥

जो मांगते हैं राज्य आधा, है प्रभूत उदारता ।
पाकर सुअवसर कौन ऐसा, नर उपेक्षा धारता ।
जिस पर नहीं अधिकार कुछ भी, मिल रहा आधा तुम्हें ।
बलवान होकर भी सदाशय[7], पाण्डुसुत समझो उन्हें ॥33॥

गीतिका छन्द

नीर भर आया नयन में, सुना जब कौन्तेय ने ।
विलंवित होकर इडापथ[8], गहा फिर अभिधेय[9] ने ।
नहीं विस्मय पितामह गुरू, यदि हमारे साथ हैं ।
अति विलक्षण तातश्री[10] की, ही लगी यह बात है ॥34॥

किंतु फिरभी सुयोधन का, दुराग्रंह जाता नहीं
रूग्ण को औषधि अरूचिकर, पथ्य भी भाता नहीं ।
कृताध्वर[11] मुझसे कहा था, प्रयाणोत्सुक व्यास ने ।
किया है नेतृत्व स्वीकृत, सुत तुम्हारा ह्रास ने ॥35॥

वर्ष तेरह हो चुके हैं, आ गया क्या काल वह ।
टालता आया जिसे मैं, आज तक बहु कष्ट सह ।
क्या अजातारित्व[12] मेरा, नहीं निंदित दंभ है ।
हो गया राज्यार्थ मुझको, कान्तरण अवलंब है ॥36॥

1. आदर्श	5. दांत	9. कहने योग्य
2. विद्वान वाग्मी	6. कुटुम्ब सहित	10. धृतराष्ट्र
3. अपमान	7. उदार चेता	11. राजसूय यज्ञ करके
4. सर्प	8. वाणी का पंथ	12. अजातशत्रुता

कहा केशव ने स्वयं थे, राम[1] आए हस्तिपुर ।
दिया दिव्य प्रबोध हितकर, उद्धरण देकर प्रचुर ।
अभी फिर मैत्रेय ऋषि ने, भी यही उद्‌यम किया
किन्तु था कौरव अनाश्रव[2], श्राप इस कारण दिया ॥

गीतिकाछन्द

नहीं कुछ भी दोष अब है, भीष्म या आचार्य का ।
अंबिकासुत[3] का नहीं कुछ, विदुर नय[4] आचार्य का ।
नहीं नर अवरोध क्षम है, कालगति अनिवार्य है ।
आप भी कारण नहीं नृप, अत: संयम धार्य है ॥

एक लघु भी छिद्र करता, निमज्जित[5] जलयान को
कुरूतरी[6] कब तक सहेगी, अचल[7] से अभिमान को
यदि बली होकर निरंकुश, आचरण करता यहां
तो निराश्रित नीति पीड़ित, सिर छिपाएगी कहां ॥

दृष्टि यदि पाए विफलता, इडा[8] का सुप्रंयोग हो
वह रहे निष्प्रभ तभी बहु, बाहुबल विनियोग हो
रिपु लगे दुर्मद निशित शर, नीति के रक्षक बने
सुबल से उत्सार्य[9] सद्‌य:[10], राष्ट के भक्षक घने ॥40॥

1. परशुराम	5. डूबा हुआ	9. निर्मूल करने योग्य
2. न सुनने वाला	6. कुरूवंष की नाव	10. तुरन्त
3. धृतराष्ट्र	7. पर्वत	
4. नीति	8. वाणी	